

क्षत्रचूडामणि

KSHATRACHUDAAMANI

आ. वादीभसिंह · १०वीं शती · अभिलेख ४४/९०

श्री वादिराज-२



आ. वादीभसिंह

संक्षिप्त परिचय

आचार्य वादीभसिंह कृत — जीवंधर-कथा को नीति-सूक्तियों से गुंथे लघु श्लोकों में कहने वाला अनूठा काव्य; प्रत्येक श्लोक का उत्तरार्ध प्रायः सुभाषित है।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

क्षत्रचूडामणि — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक ४४ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. वादीभसिंह; रचना-काल १०वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक २७०) के अनुसार इनका समय ११०३ है तथा गुरु श्री वादिराज-२। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "स्याद्वादसिद्धि" उल्लिखित है। इसी लेखनी से गद्यचिन्तामणि भी इस सूची में सम्मिलित है। समकालीन ग्रन्थों में चन्द्रप्रभचरित, प्रद्युम्नचरित, यशस्तिलकचम्पू, नीतिवाक्यामृत, गोम्मटसार जीवकाण्ड, गोम्मटसार कर्मकाण्ड परिगणित हैं।

इसी लेखनी से

गद्यचिन्तामणि

समकालीन ग्रन्थ

चन्द्रप्रभचरित

प्रद्युम्नचरित

यशस्तिलकचम्पू

नीतिवाक्यामृत

गोम्मटसार जीवकाण्ड

गोम्मटसार कर्मकाण्ड

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗

जैनकोश ↗

Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

← गद्यचिन्तामणि

यशस्तिलकचम्पू →

श्रुतधारा · ग्रन्थ ४४/९० · स्रोत: ९०-ग्रन्थ कालानुक्रमिक सूची (मुमुक्षु)